Abu Jahl Ki Maut (Hindi)

अबू जह्ल की मौत

- दो कमसिन मुजाहिदीन 2
- जो रोता है उस का काम होता है 17
- लटक्ता बाज़ू 6
- सफ़र के 32 म-दनी फूल 21
- जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام का घोड़ा 16

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

अबू जह्ल की मौत

येह रिसाला (**अबू जह्ल की मौत**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अबू जह्ल की मौत[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (28 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़्फ़िरत हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मेरा एक इस्लामी भाई था, मरने के बा'द उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह तआ़ला** ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह तआ़ला** ने मुझे बख़्श दिया । मैं ने पूछा : किस अ़मल के सबब ? कहने लगा : मैं ह़दीस लिखता था जब भी **शाहे ख़ैरुल अनाम** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्रे ख़ैर आता मैं सवाब की निय्यत से "صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم" लिखता, इसी अ़मल की ब-र-कत से मेरी मग़्फ़िरत हो गई । **(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص٤٦٣)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ (5,6,7 र-जबुल मुरज्जब 1420 सि.हि. बरोज़ इतवार मदीनतुल औलिया मुलतान) में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

दुरूद की जगह ﺻ लिखना ह़राम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ الله ! दुरूद शरीफ़ लिखने की भी क्या ख़ूब ब-र-कतें हैं। इस **ह़िकायत** से येह भी मा'लूम हुवा जब भी दुरूद शरीफ़ पढ़ें या लिखें "**सवाब की निय्यत**" होना ज़रूरी है और येह तो हर अ़मल में लाज़िम है, अगर किसी अच्छे अ़मल में **अच्छी निय्यत** न होगी तो **सवाब** नहीं मिलेगा। इस लिये हर हर अ़मल से क़ब्ल अच्छी अच्छी निय्यतों की आ़दत बनानी चाहिये। **दुरूद शरीफ़** लिखने के तअ़ल्लुक़ से बा'ज़ **म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये : जब भी नामे अक़्दस लिखें तो ज़बान से صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहें भी और लिखें भी नीज़ मुकम्मल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखा करें, इस की जगह इस का **मुख़फ़्फ़फ़** (Abbreviation) صلعم या ﺻ लिखना ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 534) इसी त़रह़ جَلَّ جَلَالُہٗ की जगह ؔج या عَلَيْهِ السَّلَام की जगह ؑع, رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की जगह ؓرض और رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बजाए ؒرح मत लिखा कीजिये।

दो कमसिन मुजाहिदीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **ग़ज़्वए बद्र** के दिन जब मैं मुजाहिदीन की सफ़ में खड़ा था, मैं ने अपने दाएं बाएं दो कमसिन अन्सारी लड़के देखे। इतने में एक ने आहिस्ता से मुझ से कहा : **يَاعَمِّ! هَلْ تَعْرِفُ اَبَا جَهْلٍ؟** चचाजान ! आप अबू जह्ल को पहचानते हैं ? मैं ने जवाब दिया : हां लेकिन तुम्हें उस से क्या काम है ? उस ने कहा : मुझे मा'लूम हुवा है वोह गुस्ताख़े रसूल है, ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं उस को देख लूं तो उस

पर टूट पड़ूं या तो उस को मार डालूं या ख़ुद मर जाऊं । दूसरे लड़के ने भी मुझ से इसी त़रह़ की गुफ़्त–गू की । (शाइ़र इन दोनों नौ उ़म्र लड़कों के जज़्बात की अ़क्कासी करते हुए कहता है)

क़सम खाई है मर जाएंगे या मारेंगे नारी को

सुना है गालियां देता है येह मह़बूबे बारी को

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मज़ीद फ़रमाते हैं : अचानक मैं ने देखा कि अबू जह्ल अपने सिपाहियों के दरमियान खड़ा है। **मैं** ने उन लड़कों को अबू जह्ल की त़रफ़ इशारा कर दिया । वोह तलवारें लहराते हुए उस पर टूट पड़े और पै दर पै वार कर के उसे पछाड़ दिया । फिर दोनों अपने प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** हम ने **अबू जह्ल** को ठिकाने लगा दिया है । सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम में से किस ने उसे क़त्ल किया है ? दोनों ही कहने लगे : मैं ने । शहन्शाहे नामदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम ने अपनी ख़ून आलूदा तलवारें साफ़ कर ली हैं ? दोनों ने अ़र्ज़ की : जी नहीं । मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन तलवारों को मुला–ह़ज़ा कर के फ़रमाया : كِلَاكُمَا قَتَلَهٗ या'नी तुम दोनों ने उसे क़त्ल किया है ।

(بُخاری ج۲ ص۳۵٦ حدیث۳۱٤۱)

दोनों मुन्नों का भी ह़म्ला ख़ूब था बू जह्ल पर

बद्र के उन दोनों नन्हे जां निसारों को सलाम

येह नौ उ़म्र कौन थे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह इस्लाम के शाहीन सिफ़त कमसिन मुजाहिदीन जिन्हों ने लश्करे कुरैश के सिपह सालार, दुश्मने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा और इस उम्मत के संगदिल व सरकश फ़िरऔ़न **अबू जह्ल** को मौत के घाट उतारा उन के अस्माए गिरामी हैं : **मुआ़ज़** और **मुअ़व्विज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا । येह दोनों सगे भाई थे । इन के इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सद हज़ार तह़सीनो आफ़रीन और इन के वल्वलए जिहाद पर लाखों सलाम कि इस लड़क-पन और खेलने कूदने के अय्याम में ही इन्हों ने अपनी ज़िन्दगियों को म-दनी रंग में रंग लिया और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र कर के लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालार **अबू जह्ले** जफ़ाकार से टक्कर ले ली और उस को ख़ाको ख़ून में लौटता कर दिया । किसी शाइ़र ने इन दोनों म-दनी मुन्नों के **अबू जह्ल** पर ह़म्ला करने की क्या ख़ूब मन्ज़र कशी की है :

गिरा इस त़रह़ कुन्दे जोड़ कर शहबाज़ का जोड़ा
कि इक दम में सफ़े ज़ाग़ो ज़ग़न का सिल्सिला तोड़ा

जवानों के मुक़ाबिल पहलवानों की त़रह़ अड़ते
बराबर वार करते वार सहते चौमुखी लड़ते

हटाते मारते और काटते बढ़ते गए दोनों
बसाने मौज औजे रेग पर चढ़ते गए दोनों

उधर बू जह्ल भी करने लगा बचने की तदबीरें
न उस की धम्कियां काम आ सकीं लेकिन न तक़्दीरें

बरूए बाज़ूए तक़्दीर तदबीरें नहीं चलतीं
जहां शमशीर चल जाती है तक़्दीरें नहीं चलतीं

हटा वोह देख कर इन को येह फिर उस के क़रीं पहुंचे
जहां बू जह्ल पहुंचा दोनों लड़के भी वहीं पहुंचे

न भागा जा सका तो उन को धमकाने लगा काफ़िर
सिपर के आसरे पर तैग़ चमकाने लगा काफ़िर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

वोह पुख़्ता-कार येह कमसिन, येह पैदल और वोह घोड़े पर
लगा मरकब कुदाने ख़श्मगीं शेरों के जोड़े पर

मगर उ़श्शाक़ अपनी जान की परवा नहीं करते
ख़ुदा से डरने वाले मौत से हरगिज़ नहीं डरते

हवा में गूंज उठीं रा'द की मानिन्द तक्बीरें
गिरीं बू जहल पर दो तेज़ ख़ून आशाम शमशीरें

दहन से आह निकली हाथ से तैग़ो सिपर छूटी
गिरा घोड़ा भी खा कर ज़ख़्म दोनों की कमर टूटी

ज़मीं धंसती थी जिस बद बख़्त की अदना सी ठोकर पर
पड़ा था ख़ून में लिथड़ा हुवा मिट्टी की चादर पर

वोह हड्डी और ख़ूं जिस पर हमेशा नाज़ रहता था
वोही हड्डी शिकस्ता थी वोही अब ख़ून बहता था

ज़बां से चीख़ता और कुफ़्र बकता ही रहा काफ़िर
मददगारों को चारों सम्त तक्ता ही रहा काफ़िर

वोह जंगआवर रिसाला जिस के बल पर ज़ोर था सारा
उसी में घुस के दो कमज़ोर लड़कों ने उसे मारा

जवानो ! क़ाबिले तक़्लीद है इक़्दाम दोनों का
जबीने लौहे ग़ैरत पर लिखा है नाम दोनों का

वोह ग़ाज़ी थे मए हुब्बे नबी का जोश था उन को
लबे कौसर पहुंच कर शौक़े नोशा नोश था उन को

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी

कुन्दा : कन्धा। **ज़ाग़ :** कव्वा। **ज़ग़न :** चील। **बसान :** मानिन्द। **मौज :** पानी की लहर। **औज :** बुलन्दी। **रेग :** धूल। **क़रीं :** क़रीब। **सिपर :** ढाल। **मरकब :** सुवारी। **ख़श्मगीं :** ग़ज़बनाक। **रा'द :** बिजली की कड़क। **ख़ून आशाम शमशीरें :** ख़ूंख़ार तलवारें। **दहन :** मुंह। **तैग़ :** तलवार। **लईन :** ला'नती। **अ़दू :** दुश्मन। **शिकस्ता :** टूटी हुई। **रिसाला :** हज़ार फ़ौज का दस्ता। **जबीन :** पेशानी। **लौह :** तख़्ती। **मए हुब्बे नबी :** नबी की **महब्बत** की शराब।

लटक्ता बाज़ू

एक रिवायत के मुताबिक़ इन दोनों भाइयों में से ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़रमान है : मैं अपनी तलवार लहराता हुवा **अबू जह्ल** पर टूट पड़ा मेरे पहले वार से उस की टांग की पिंडली कट कर दूर जा गिरी । उस के बेटे इक्रमा (जो बा'द में मुसल्मान हुए) ने मेरी गरदन पर तलवार का वार किया मगर उस से मेरा बाज़ू कट गया और खाल के एक तस्मे के साथ लटक्ने लगा । सारा दिन लटक्ते हुए बाज़ू को संभाले मैं दूसरे हाथ से दुश्मन पर तलवार चलाता रहा । **लटक्ता बाज़ू** लड़ने में रुकावट बन रहा था, लिहाज़ा मैं ने उसे पाउं के नीचे दबा कर खींचा जिस से जिल्द (या'नी खाल) का तस्मा टूट गया और मैं उस से आज़ाद हो कर फिर कुफ़्फ़ार के साथ मसरूफ़े पैकार (या'नी जंग) हो गया । **मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का ज़ख़्म ठीक हो गया और येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहे । ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी इ़याज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इब्ने वह्ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की है, ख़त्मे जंग के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपना कटा हुवा बाज़ू ले कर बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए । त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लुआ़बे दहन (या'नी मुबारक मुंह का थूक शरीफ़) लगा कर वोह कटा हुवा बाज़ू फिर कन्धे के साथ जोड़ दिया । (مَدَارِجُ النُّبُوَّة ج۲ ص۸۷)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! अगर तोड़ने वाले का वुजूद है तो जोड़ने वाला भी मौजूद है ।

अ़ली के वासिते़ सूरज को फैरने वाले

इ़शारा कर दे कि मेरा भी काम हो जाए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अनोखा जज़्बा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में इ़बादत के दौरान कैसा वज्द सा त़ारी हो जाता था कि उन्हें किसी तक्लीफ़ का एह़सास ही नहीं होता था, जी हां, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करना भी इ़बादत ही है। सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का खाल में लटक्ते हुए हाथ के साथ लड़ना फिर उसे पाउं में दबा कर खींच कर खाल को तोड़ डालना येह ऐसी बातें हैं जो दिलों में झुरझुरी पैदा कर दें मगर इन ह़ज़रात पर कुछ ऐसी वारफ़्तगी छाई होती थी कि तक्लीफ़ का एह़सास ही नहीं होता था। राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के इन जांबाज़ों और इस्लाम के ह़क़ीक़ी सर फ़रोशों के नक़्शे क़दम पर चलते हुए हमें भी **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना चाहिये और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में आने वाली तकालीफ़ हंसी ख़ुशी बरदाश्त करनी चाहिएं।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो

होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

अबू जह्ल का सर

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कौन है जो **अबू जह्ल** को देख कर उस का ह़ाल बताए ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जा कर लाशों में देखा तो **अबू जह्ल** ज़ख़्मी पड़ा हुवा दम तोड़ रहा था, उस का सारा बदन फ़ौलाद में छुपा हुवा था, उस के हाथ में तलवार थी जो रानों पर रखी हुई थी, ज़ख़्मों की शिद्दत के बाइ़स अपने किसी उ़ज़्व को जुम्बिश नहीं दे सकता था । सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस की गरदन पर पाउं रखा, इस आ़लम में भी उस के **तकब्बुर** का आ़लम येह था कि ह़क़ारत से बोल उठा : ऐ बकरियों के चरवाहे ! तू बड़ी ऊंची और दुश्वार जगह पर चढ़ गया । **(السیرۃ النبویة لابن ھشام ص٢٦٣،٢٦٢)** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं अपनी कुन्द तलवार से **अबू जह्ल** के सर पर ज़र्बें लगाने लगा, जिस से तलवार पर उस के हाथ की गिरिफ़्त ढीली पड़ गई, मैं ने उस से तलवार खींच ली । जां कनी के आ़लम में उस ने अपना सर उठाया और पूछा : फ़त्ह़ किस की हुई ? मैं ने कहा : **لِلّٰہِ وَرَسُوْلِہٖ** या'नी **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى الله تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلّم के लिये ही फ़त्ह़ है । फिर मैं ने उस की दाढ़ी को पकड़ कर झन्झोड़ा और कहा : **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَخْزَاکَ یَا عَدُوَّ اللہِ** या'नी उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि जिस ने ऐ दुश्मने ख़ुदा ! तुझे ज़लील किया । मैं ने उस का ख़ौद उस की गुद्दी से हटाया और उसी की तलवार से उस की गरदन पर ज़ोरदार वार किया उस की गरदन कट कर सामने जा गिरी । फिर मैं ने उस के हथियार, ज़िरह वग़ैरा उतार लिये और उस

का **सर** उठा कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो गया और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह दुश्मने ख़ुदा **अबू जहल** का सर है। सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार फ़रमाया : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَعَزَّالْاِسْلَامَ وَاَهْلَهٗ** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने इस्लाम और अहले इस्लाम को इ़ज़्ज़त बख़्शी। फिर सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दए शुक्र अदा किया। फिर फ़रमाया : हर उम्मत में एक फ़िरऔ़न होता है इस उम्मत का फ़िरऔ़न अबू जहल था।

(سُبُلُ الْهُدٰی ج٤ ص٥١-٥٢)

अबू जहल की आख़िरी बक्वास

अबू जहल का जज़्बए इ़नाद और **अ़दावते रसूले रब्बुल इ़बाद** तो देखिये कि टांगें कट चुकी हैं, सारा जिस्म ज़ख़्मों से चूर चूर है, मौत सर पर मंडला रही है, इस ह़ालत में भी उस सख़्त-जान शक़ी अ-ज़ली (या'नी हमेशा ही से बद बख़्त) की शक़ावत (या'नी बद बख़्ती) का आ़लम येह है कि उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को कहा : "अपने नबी को मेरा येह पैग़ाम पहुंचा देना कि मैं उ़म्र भर उस का दुश्मन रहा हूं और इस वक़्त भी मेरा जज़्बए अ़दावत शदीद तर है।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने जब सरकारे वाला तबार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में उस अ-ज़ली बद बख़्त का येह जुम्ला अ़र्ज़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी **उम्मत का फ़िरऔ़न** तमाम उम्मतों के फ़िरऔ़नों से ज़ियादा संगदिल और कीना परवर है। मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) के फ़िरऔ़न को जब (बह़रे अह़मर की) मौजों ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

अपने नरग़े में ले लिया तो पुकार उठा :

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝ (پ۱۱، یونس:۹۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं मुसल्मान हूं।

मगर इस उम्मत का फ़िरऔन मरने लगा तो उस की इस्लाम दुश्मनी और सरकशी में कमी के बजाए इज़ाफ़ा हो गया।

(مُحمّد رسول اللہ صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ وسلَّم ج۳ص۴۳۱، تفسیر کبیر ج۱۱ص۲۲۴،۲۲۵)

कुदरत के निराले अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कुदरत के भी निराले अन्दाज़ हैं बड़े बड़े जंग आज़्माओं ने **अबू जह्ल** पर तलवारों के वार किये मगर वोह न मरा, आख़िरे कार **दो म-दनी मुन्नों** ने उस को गिरा दिया ! इस ह़म्ले में वोह आ़जिज़ और बे दस्तो पा हो गया, हिलने जुलने की उस में सकत न रही। मगर उस सख़्त-जान की रूह़ न निकली, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की कुदरत कि आख़िरे दम तक इस के होशो ह़वास क़ाइम रहे। इस में ह़िक्मत येह थी कि इस गु़रूरो तकब्बुर के पुतले को उस मज़्लूम व बेकस बन्दे के हाथों वासिले जहन्नम किया गया जो माली लिहा़ज़ से ख़ाली, जिस्मानी लिहा़ज़ से कमज़ोर और क़बीले के लिहा़ज़ से भी बे यारो मददगार था। इस्लाम लाने के सबब **अबू जह्ल**, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ को गालियां बकता और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ के सरे मुबारक के बाल पकड़ कर त़मांचे रसीद किया करता था उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ किसी क़िस्म की जवाबी कारवाई

करने से क़ासिर थे, आज वोही सह़ाबी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से उस की छाती पर सुवार हो गए, उस के सर को ठोकरें मार रहे हैं, अपने पाउं तले रौंद रहे हैं, उस के हाथों से तलवारे आबदार छीन कर उसी की तलवार से उस का सर काट रहे हैं। ऐसे वक़्त में **अबू जह्ल** बेहोश नहीं होश में है, अपनी तज़्लील व रुस्वाई का शुऊ़र रखता है लेकिन दम नहीं मार सकता। सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने कमज़ोर हाथों से उस का सरे ग़ुरूर काट कर, उठा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'लैने मुबा-रकैन के नीचे फेंक देते हैं। अबू जह्ल की ज़िल्लत आमेज़ मौत जुम्ला कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन और तमाम मुनाफ़िक़ीन व मुरतद्दीन के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत है। और यक़ीनन इ़ज़्ज़त **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم और मुसल्मानों के लिये है जैसा कि पारह 28 **सू-रतुल मुनाफ़िक़ून** आयत 8 में इर्शाद होता है :

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और इ़ज़्ज़त तो **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसल्मानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं।

मुसल्मानों का सामाने जंग

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अबू जह्ल **ग़ज़्वए बद्र** में क़त्ल हुवा था। ग़ज़्वए बद्र का वाक़िआ़ 17 **र-मज़ानुल मुबारक** 2 सि.हि. मक़ामे बद्र में पेश आया। इस में मुसल्मानों की ता'दाद बहुत कम या'नी सिर्फ़ **313** थी, इन के पास सिर्फ़ दो घोड़े, 70 ऊंट, शिकस्ता

कमानें, टूटे फूटे नेज़े और पुरानी तलवारें थीं । मगर उन का जज़्बए ईमानी बे मिसाल था । उन्हें सामाने जंग पर नहीं **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم पर भरोसा था ।

कुफ़्फ़ार का सामाने जंग

एक त़रफ़ मुसल्मानों की बे सरो सामानी का येह आ़लम है तो दूसरी त़रफ़ दुश्मनाने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की ता'दाद एक हज़ार है, उन के पास 100 बर्क़ रफ़्तार घोड़े हैं जिन पर 100 ज़िरह पोश जंगजू सुवार हैं, 700 आ'ला नस्ल के ऊंट हैं, खाने पीने के ज़ख़ाइर के अम्बार उठाने वाले बार बरदार जानवर मज़ीद बरआं, नव नव दस दस ऊंट रोज़ाना ज़ब्ह़ कर के लश्करे कुफ़्फ़ार की पुर तकल्लुफ़ दा'वत का एहतिमाम होता है, हर शब बज़्मे ऐ़शो नशात़ बरपा की जाती है जिस में शराब के जाम लुंढाए जाते हैं, ख़ूब सूरत कनीज़ें अपने नाच और सेह्‌र अंगेज़ नग़्मात से उन की आतशे ग़ैज़ो ग़ज़ब भड़काती रहती हैं। इस के बा वुजूद ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा के चेहरों पर तस्कीन व इत़्मीनान का नूर बरस रहा है इन के दिलों में ईमान व यक़ीन की शम्अ़ फ़रोज़ां है, शराबे वह्‌दत के नशे में सरशार अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का नामे मुबारक बुलन्द करने के लिये और उस के प्यारे मह्‌बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा दीन का परचम ऊंचा लहराने के शौक़ में सर धड़ की बाज़ी लगाने का अ़ज़्म बिल जज़्म किये रिज़ाए इलाही की मन्ज़िल की त़रफ़ मस्ताना वार बढ़े चले जा रहे हैं, इन्हें अपनी ता'दाद की कमी, सामाने जंग की क़िल्लत और दुश्मन की कसीर ता'दाद और सामाने ह़र्ब की कसरत की कोई परवाह नहीं, बात़िल के संगीन क़ल्ओं को पाउं की ठोकरों से रेज़ा रेज़ा कर देने का अ़ज़्म इन्हें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (کنزالعمال)

माहिये बे आब (या'नी बिग़ैर पानी की मछली) की त़रह़ तड़पा रहा है, शौक़े शहादत इन्हें बेचैन किये देता है, जां निसाराने बद्र की अ़-ज़्-मतो शान का बयान करते हुए शाइ़र कहता है :

यहां ज़ौक़े शहादत और ईमां की ह़लावत थी
वहां सीनों में कीना था शक़ावत थी अ़दावत थी

खड़े थे सुब्ह़ से डट कर मुक़ाबिल फ़ौजे शैत़ां के
मुजाहिद जिन को वा'दे याद थे आयाते क़ुरआं के

अबद तक नाम उन का हो गया अल्लाह के ग़ाज़ी
जो ग़ैरत मन्द राहे ह़क़ में थे मसरूफ़े जांबाज़ी

येह जीना भी इ़बादत था येह मरना भी इ़बादत थी
ग़ज़ा ह़क़ के लिये ह़क़ के लिये उन की शहादत थी

खुला था उन की ख़ात़िर दाइमी जन्नत का दरवाज़ा
शहादत का लहू जिन के रुख़ों का बन गया ग़ाज़ा

वोह ख़ुश क़िस्मत हैं मिल जाए जिन्हें दौलत शहादत की
शहादत आ'ला मन्ज़िल है मुसल्मानी सआ़दत की

येह रंगीं शाम, सुब्ह़े ईद की तम्हीद होती है
शहादत पा के हस्ती ज़िन्दए जावीद होती है

ज़मीं पर चांद तारों की त़रह़ ताबिन्दा रहते हैं
शहीद इस दारे फ़ानी में हमेशा ज़िन्दा रहते हैं

ख़ुदा रह़मत करे उन आ़शिक़ाने पाक त़ीनत पर
इसी रंगत को है तरजीह़ इस दुन्या की ज़ीनत पर

बसा हो जब कि नक़्शे ह़ुब्बे मह़बूबे ख़ुदा दिल में
समा सकती है क्यूंकर ह़ुब्बे दुन्या की हवा दिल में

इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है
मुह़म्मद की मह़ब्बत दीने ह़क़ की शर्त़े अव्वल है

ख़ुदा के दामने तौह़ीद में आबाद होने की
मुह़म्मद की ग़ुलामी है सनद आज़ाद होने की

मुह़म्मद की मह़ब्बत रूह़े मिल्लत जाने मिल्लत है
मुह़म्मद की मह़ब्बत आने मिल्लत शाने मिल्लत है

येह रिश्ता दुन्यवी क़ानून के रिश्तों से बाला है
मुह़म्मद की मह़ब्बत ख़ून के रिश्तों से बाला है

पिदर, मादर बिरादर माल जां औलाद से प्यारा
मुह़म्मद है मताए़ आ़लमे ईजाद से प्यारा

दिखाई जिन के हाथों ह़क़ ने बात़िल को निगूं-सारी
येही जज़्बा था उन मर्दाने ग़ैरत मन्द पर त़ारी

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी

शक़ावत : बद बख़्ती । **ह़लावत :** मिठास । **ग़ज़ा :** जंग । **रुख़ों का ग़ाज़ा :** चेहरों का पावडर । **दाइमी :** हमेशा रहने वाली । **ज़िन्दए जावीद :** हमेशा ज़िन्दा रहने वाला । **तम्हीद :** किसी बात का आग़ाज़ । **दारे फ़ानी :** ख़त्म होने वाली दुन्या । **ताबिन्दा :** रोशन । **पाक त़ीनत :** नेक फ़ित़रत । **दुन्या की हवा :** दुन्या की हवस । **मिल्लत :** क़ौम । **मताअ़ :** दौलत । **पिदर :** बाप । **मादर :** मां । **बिरादर :** भाई । **निगूंसार :** शर्म से सर झुकाए हुए ।

ह़ैरत अंगेज़ जज़्बे का राज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह अ़ज़्मे मोह्कम, येह बात़िल से टकरा जाने का वालिहाना शौक़, ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم का नामे पाक बुलन्द करने की तड़प, येह बे ख़ौफ़ी और बहादुरी उन्हें कहां से मिली ? यक़ीनन येह सब **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की **मह़ब्बत** और उन दुआ़ओं का **समर** (या'नी नतीजा) है जो लबहाए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निकलीं । चुनान्चे इमाम **बैहक़ी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "बद्र के रोज़ हम में से ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के इ़लावा कोई सुवार न था वोह अब्लक़ (या'नी चितकुब्रे) घोड़े पर सुवार थे, उस रात सब सो रहे थे, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारी रात नफ़्ल पढ़ते रहे और रोते रहे ।" سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! अश्कों की ज़बानी फ़त़्हो नुसरत के लिये जो दुआ़एं मांगी गई होंगी उन की क़बूलिय्यत का क्या आ़लम होगा ! **(دَلَائِلُ النُّبُوَّة ج٣ ص٤٩)**

फ़िरिश्तों के ज़रीए मदद

अमीरुल मुअमिनीन, इमामुल आ़दिलीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **बद्र** के रोज़ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़िब्ला रू खड़े हो गए और अपने दोनों हाथ बारगाहे इलाही جَلَّ جَلَالُهٗ में फैला दिये और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से फ़रियाद शुरूअ़ कर दी यहां तक कि मह़्वय्यत (या'नी इस्तिग़राक़) के आ़लम में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक कन्धे से चादरे पाक ज़मीन पर तशरीफ़ ले आई, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तेज़ी से आए और चादर शरीफ़ उठा कर सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक कन्धे पर डाल दी, फिर वालिहाना अन्दाज़ में पीछे से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सीने से लगा लिया और अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप की अपने रब عَزَّوَجَلَّ से येह दुआ़ काफ़ी है । यक़ीनन **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** अपना अ़ह्द पूरा फ़रमाएगा । उसी वक़्त सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام येह आयत (या'नी पारह 9 **सू-रतुल अन्फ़ाल** आयत 9) ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुए :

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝٩

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं ह़ज़ारों फ़िरिश्तों की क़ित़ार से ।

(مُسلِم ص٩٦٩ حدیث١٧٦٣)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रसूलों के सरताज, साह़िबे मे'राज اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

की दुआओं को क़बूलिय्यत का ताज पहना दिया गया। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद

जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام का घोड़ा

''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान'' में है, हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मुसल्मान उस रोज़ कुफ़्फ़ार का तआ़क़ुब (या'नी पीछा) फ़रमाते थे और काफ़िर मुसल्मान के आगे आगे भागता जाता था अचानक ऊपर से कोड़े की आवाज़ आती थी और सुवार का येह कलिमा सुना जाता **''اَقْدِمْ حَيْزُوْمُ''** या'नी ''ऐ **हैज़ूम** ! आगे बढ़'' (**हैज़ूम** हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उस की नाक तलवार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़ख़्मी हो गया। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ से जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येह कैफ़िय्यात बयान की गईं तो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : ''येह तीसरे आस्मान की मदद है।'' **(مُسلِم ص٩٦٩)** एक बद्री सहाबी हज़रते अबू दावूद माज़नी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) फ़रमाते हैं : मैं **ग़ज़्वए बद्र** में एक मुश्रिक की गरदन मारने के दर पै हुवा, मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही उस का सर कट कर गिर गया तो मैं ने जान लिया कि इस को किसी और ने क़त्ल किया। **(تفسیر دُرِّ مَنثور ج٤ ص ٣٥-٣٦)** हज़रते सह्ल बिन हुनैफ़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) फ़रमाते हैं : **बद्र** के रोज़ हम में से कोई तलवार से इशारा करता था तो उस की तलवार पहुंचने से क़ब्ल ही मुश्रिक का सर तन से जुदा हो कर गिर जाता था। (ایضاً ص٣٣) (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 335, 336, मुलख़्ख़सन व मुख़र्रजन)

दुआ़ मोमिन का हथियार है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कैसे ही कठिन ह़ालात पैदा हो जाएं हमें नज़र अस्बाब पर नहीं बल्कि **मुसब्बिबुल अस्बाब** جَلَّ جَلَالُهٗ पर रखनी चाहिये और दुआ़ से हरगिज़ ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये । कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِن** या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार है । (مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج۱ص۲۱۵ حدیث۴۳۰) **ग़ज़्वए बद्र** में दुश्मनों को अपनी भारी ता'दाद और कस्रते अस्लिह़ा पर नाज़ था और मुसल्मानों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भरोसा । मुजाहिदीन में जज़्बए शहादत कूट कूट कर भरा हुवा था और मुसल्मानों का बच्चा बच्चा शौक़े शहादत से सरशार था । चुनान्चे

जो रोता है उस का काम होता है

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के छोटे भाई ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो अभी नौ उ़म्र ही थे **ग़ज़्वए बद्र** के मौक़अ़ पर फ़ौज की तय्यारी के वक़्त इधर उधर छुपते फिर रहे थे । ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने **तअ़ज्जुब** से पूछा : क्यूं छुपते फिर रहे हो ? कहने लगे : कहीं ऐसा न हो कि मुझे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم देख लें और छोटा समझ कर जिहाद पर जाने से मन्अ़ फ़रमा दें । भय्या ! मुझे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लड़ने का बड़ा शौक़ है, काश ! मुझे शहादत नसीब हो जाए । आख़िरे कार सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तवज्जोह शरीफ़ में आ ही गए और उन को कम

उ़म्री की वजह से मन्अ़ फ़रमा दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ग़-ल-बए शौक़ के सबब रोने लगे, "जो रोता है उस का काम होता है" के मिस्दाक़ उन का आरज़ूए शहादत में **रोना काम आ गया** और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी । जंग में शरीक हो गए और दूसरी आरज़ू भी पूरी हो गई कि उसी जंग में **शहादत** की सआ़दत भी नसीब हो गई । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बड़े भाई ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मेरे भाई उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ छोटे थे और तलवार बड़ी थी लिहाज़ा मैं उस की ह़माइल के तस्मों में गिरहें लगा कर ऊंची करता था । **(کتاب المغازی للواقدی ج ۱ ص ۲۱)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! छोटा हो या बड़ा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जान क़ुरबान करना ही उन की ज़िन्दगी का मक़्सदे वह़ीद था, लिहाज़ा काम्याबी ख़ुद आगे बढ़ कर उन के क़दम चूमती थी । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का जज़्बए जिहाद और शौक़े शहादत आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया और बड़े भाई सय्यिदुना सा'द इब्ने अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के तआ़वुन के बारे में भी आप ने सुना । बेशक आज भी बड़ा भाई अपने छोटे भाई का और बाप अपने बेटे का तआ़वुन करता है मगर सिर्फ़ दुन्यवी मुआ़-मलात में और फ़क़त दुन्यवी मुस्तक़्बिल रोशन करने की ग़रज़ से । अफ़्सोस ! हमारे पेशे नज़र सिर्फ़ दुन्या की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी का सिंघार है जब कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की निगाहों में आख़िरत की ज़िन्दगी की बहार थी । हम दुन्यवी आसाइशों पर निसार हैं और वोह उख़्वी राह़तों के त़लब गार थे । हम दुन्या की ख़ातिर हर त़रह़ की मुसीबतें झेलने के लिये तय्यार रहते

हैं और वोह आख़िरत की सुर्ख़–रूई की आरज़ू में हर त़रह़ की राह़ते दुन्या को ठोकर मार कर सख़्त मसाइबो आलाम और ख़ून आशाम तलवारों तले भी मुस्कुराते रहे ।

रब्बे का'बा के परस्तार वोह मर्दाने जलील ! पासबाने ह़रम, वारिसे ईमाने ख़लील !
वोह सरे फ़र्शे ज़मीं इज़्ज़ते ह़व्वा का सुबूत वोह तहे चर्ख़े बरीं अ़-ज़-मते आदम की दलील
रास्त गुफ़्तारो कुशादा दिलो बेदार दिमाग़ मुद्दतुल उ़म्र जो आफ़ात के सायों में पले
कभी पाबन्दे सलासिल कभी शो'लों के ह़रीफ़ कभी अंगारों पे लौटे कभी कांटों पे चले
कभी तपते हुए पथ्थर की सिलें सीनों पर कभी कांधों पे उठाए हुए वोह बारे गिरां
कभी पुश्तों पे सलाख़ों के सुलगते हुए दाग़ कभी चेहरों पे त़मांचों के अलम-नाक निशां
कभी नेज़ों के सज़ावार कभी तीरों के कभी त़ा'नों के कचूके कभी फ़ाक़ों से निढाल
कभी चक्की की मशक़्क़त कभी तन्हाई की क़ैद कभी अपनों की मलामत कभी ग़ैरों का उबाल
कभी बोहतान त़राज़ी, कभी दुश्नामे ग़लीज़ कभी तज़्हीको तमस्ख़ुर, कभी शुब्हातो शुकूक
कभी रूहानी अज़िय्यत, कभी तौहीने ज़मीर कभी ईंटों से तवाज़ोअ़, कभी कोड़ों का सुलूक
कभी महबूस घरों में तो कभी ख़ाना बदर चीथड़े तन के निगह़बान, कभी वोह भी नहीं !
तिश्नगी का है वोह आ़लम कि इलाही तौबा ह़ल्क़ को चाहिये थोड़ी सी नमी वोह भी नहीं
आज़्माइश के लपक्ते हुए हंगामों में वक़्त ने उन के निशानाते क़दम देखे हैं
तख़्ताए दार पे आए तो उसे चूम लिया ऐसे जी-दार भी तारीख़ ने कम देखे हैं
किस अ़ज़ीमत के थे मालिक येह नुफ़ूसे क़ुदसी जो पड़ी वक़्त के हाथों वोह कड़ी झेल गए
सिर्फ़ इस्लाम की ख़ात़िर, फ़क़त़ अल्लाह के लिये जान से खेलना आता था उन्हें खेल गए
हम तक इस्लाम जो पहुंचा तो सिर्फ़ उन के तुफ़ैल येह ग़ुलामाने ख़ुदा नूरे रिसालत के अमीं
सर बसर पैकरे ईसार, मुजसम्म ईमां ह़श्र तक इन सा हो पैदा कोई मुम्किन ही नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी

परस्तार : पूजा करने वाला। **पासबान :** मुहाफ़िज़। **चर्ख़े बरीं :** बुलन्द आस्मान। **रास्त गुफ़्तार :** सच बोलने वाला। **पाबन्दे सलासिल :** ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा। **ह़रीफ़ :** मुक़ाबला करने वाला। **दुश्नामे ग़लीज़ :** गन्दी गालियां। **तज़्हीक :** हंसी उड़ाना। **तमस्ख़ुर :** मज़ाक़ उड़ाना। **मह़्बूस :** क़ैद। **ख़ाना बदर :** घर से निकाल देना। **तिश्नगी :** प्यास। **तख़्ताए दार :** फांसी का तख़्ता। **अ़ज़ीमत :** अ़ज़्म व इरादा। **नुफ़ूसे क़ुदसी :** पाक जानें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत,** मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशाए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (ابنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या रब्बल इबाद ! मक्के मदीने की ज़ियारत अ़ता फ़रमा" के बत्तीस हुरूफ़ की निस्बत से सफ़र के 32 म-दनी फूल

❁ **शरअ़न** मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो तीन दिन के फ़ासिले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत म-सलन शह्र या गाउं से बाहर हो गया । खुश्की में सफ़र पर तीन दिन की मसाफ़त से मुराद साढ़े सत्तावन मील (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) का फ़ासिला है (फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 8, स. 243, 270) ❁ शर-ई सफ़र करने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह सफ़र के ज़रूरी पेश आमदा या'नी सफ़र में पेश आने वाले अह़काम सीख चुका हो । (**मक-त-बतुल मदीना** का रिसाला ''मुसाफ़िर की नमाज़'' का मुता-लआ़ निहायत मुफ़ीद है) ❁ जब सफ़र करना हो तो बेहतर येह है कि पीर, जुमा'रात या हफ़्ते को करे (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 23, स. 400) ❁ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना **जुबैर बिन मुत़इम** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को सफ़र में अपने सब रु-फ़क़ा से ज़ियादा खुशहाल रहने के लिये रवानगी से क़ब्ल येह विर्द पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई : ﴾1﴿ **सू-रतुल काफ़िरून** ﴾2﴿ **सू-रतुन्नस्र** ﴾3﴿ **सू-रतुल इख़्लास** ﴾4﴿ **सू-रतुल फ़लक़** ﴾5﴿ **सू-रतुन्नास** । हर सूरत एक एक बार और हर एक की इब्तिदा में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم और सब से आख़िर में भी एक बार **बिस्मिल्लाह** पूरी पढ़ लीजिये, (इस त़रह़ सूरतें पांच होंगी और **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ छ बार)

सय्यिदुना **जुबैर बिन मुत़्इम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं यूं तो साहिबे माल था मगर जब सफ़र करता तो (सब रु-फ़क़ा से) बदह़ाल हो जाता, मज़्कूरा सूरतें सफ़र से क़ब्ल हमेशा पढ़नी शुरूअ़ कीं उन की ब-र-कत से वापसी तक ख़ुशह़ाल और दौलत मन्द रहता (ابو یعلی ج٦ص٢٦٥حدیث٧٣٨٢) ❁ चलते वक़्त सब अ़ज़ीज़ों दोस्तों से मिले और अपने क़ुसूर मुआ़फ़ कराए और अब उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 1052) ❁ लिबासे सफ़र पहन कर घर में चार रक्अ़त नफ़्ल اَلْحَمْدُ और قُلْ (هُوَاللّٰه की पूरी सूरह) से पढ़ कर बाहर निकले । वोह रक्अ़तें वापस आने तक उस के अह्ल व माल की निगह्बानी करेंगी । (ऐज़न) ❁ दो रक्अ़त भी पढ़ी जा सकती हैं, ह़दीसे पाक में है : "किसी ने अपने अह्ल के पास उन दो रक्अ़तों से बेहतर न छोड़ा, जो ब वक़्ते इरादए सफ़र उन के पास पढ़ीं" (مصنّف ابن ابی شیبة ج١ ص٥٢٩) ❁ सफ़र में तीन या इस से ज़ियादा इस्लामी भाई हों तो एक को "अमीर" बना लें कि सुन्नत है। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : "जब सफ़र में तीन शख़्स हों तो एक को अपना **अमीर** बना लें" (ابو داؤدج٣ص٥١ حدیث٢٦٠٩) ❁ इस (या'नी अमीर बनाने) में कामों का इन्तिज़ाम रहता है, सरदार (या'नी अमीर) उसे बनाएं जो ख़ुश ख़ुल्क़ (या'नी बा अख़्लाक़) आ़क़िल दीनदार हो, सरदार (या'नी अमीर) को चाहिये कि रफ़ीक़ों के आराम को अपनी आसाइश पर मुक़द्दम रखे (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1052) ❁ आईना, सुरमा, कंघा, मिस्वाक साथ रखे कि सुन्नत है (ऐज़न, स. 1051)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

❁ **ज़िक्रुल्लाह** से दिल बहलाए कि फ़िरिश्ता साथ रहेगा, न कि (बुरे) शे'र व लग़्वियात (या'नी बेहूदा बातों) से कि शैतान साथ होगा (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 729) ❁ अगर दुश्मन या डाकू का ख़ौफ़ हो तो सूरए "**لِاِیْلٰف**" पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर बला से अमान मिलेगी। येह अ़मल मुजर्रब है (الحصن الحصین ص ۸۰) ❁ सफ़र हो या ह़ज़र (या'नी क़ियाम) जब भी किसी ग़म या परेशानी का सामना हो **حَسْبُنَا اللہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْل** और **لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللہِ** ब कसरत पढ़िये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मुश्किल आसान होगी। ❁ रास्ते की चढ़ाई की त़रफ़ या सीढ़ियों पर चढ़ते हुए नीज़ बस वग़ैरा जब सड़क की ऊंची जानिब जा रही हो तो "اَللہُ اَکْبَرُ" और सीढ़ियों या ढलवान से उतरते हुए "سُبْحٰنَ اللہ" कहिये ❁ अगर कोई शख़्स सफ़र पर जा रहा हो तो उस (मुसाफ़िर) से मुसा-फ़ह़ा करे या'नी हाथ मिलाए और उस के लिये येह दुआ़ मांगे : **اَسْتَوْدِعُ اللہَ دِیْنَکَ وَاَمَانَتَکَ وَخَوَاتِیْمَ عَمَلِکَ** तरजमा : मैं तेरे दीन, तेरी अमानत और तेरे अ़मल के ख़ातिमे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं (ایضاً ص ۷۹) ❁ मुक़ीम के लिये मुसाफ़िर येह दुआ़ पढ़े : **اَسْتَوْدِعُکَ اللہَ الَّذِیْ لَایُضِیْعُ وَدَائِعَہٗ.** तरजमा : मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं जो सौंपी हुई अमानतों को ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता (ابن ماجہ حدیث ۲۸۲۵ ج ۳ ص ۳۷۲) ❁ मन्ज़िल पर उतरते वक़्त येह पढ़िये : **اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللہِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ** तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

कामिल कलिमात के वासिते से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं । **हर नुक़्सान से बचेगा** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (الحصن الحصین ص ۸۲) ❁ मुसाफ़िर की दुआ क़बूल होती है, लिहाज़ा अपने लिये, अपने वालिदैन व अहलो इ़याल और आ़म मुसल्मानों के लिये दुआ़एं कीजिये ❁ सफ़र में कोई शख़्स बीमार हो गया या बेहोश हो गया तो उस के साथ वाले उस मरीज़ की ज़रूरिय्यात में उस का माल बिग़ैर इजाज़त ख़र्च कर सकते हैं (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۳۳٤، ۳۳۰, बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 222) ❁ **मुसाफ़िर** पर वाजिब है कि नमाज़ में क़स्र करे या'नी चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ को दो पढ़े इस के ह़क़ में दो ही रक्अ़तें पूरी नमाज़ है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 743, عالمگیری ج ۱ ص ۱۳۹) ❁ मग़रिब और वित्र में क़स्र नहीं ❁ **सुन्नतों** में क़स्र नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी, ख़ौफ़ और रवा रवी (या'नी घबराहट) की ह़ालत में सुन्नतें मुआ़फ़ हैं और अम्न की ह़ालत में पढ़ी जाएंगी (عالمگیری ج ۱ ص ۱۳۹) ❁ कोशिश कर के हवाई जहाज़ या रेल या बस में ऐसे वक़्त सफ़र कीजिये कि बीच में कोई नमाज़ न आए ❁ सोने के अवक़ात में हरगिज़ ऐसी ग़फ़्लत न हो कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ क़ज़ा हो जाए ❁ दौराने सफ़र भी नमाज़ में हरगिज़ कोताही न हो, ख़ुसूसन हवाई जहाज़, रेलगाड़ी और लम्बे रूट की बस में नमाज़ के लिये पहले ही से वुज़ू तय्यार रखिये ❁ रास्ते में बस ख़राब हो जाए तो ड्राइवर या मालिकाने बस वग़ैरा को कोसने और बक बक कर के अपनी आख़िरत दाव पर लगाने के बजाए

सब्र से काम लीजिये और जन्नत की त़लब में ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाइये ❁ रेल, बस वग़ैरा में दीगर मुसाफ़िरों के ह़क़्क़े पड़ोस का ख़याल रखते हुए उन केसाथ ख़ूब हुस्ने सुलूक कीजिये, बेशक ख़ुद तक्लीफ़ उठा लीजिये मगर उन को राह़त पहुंचाइये ❁ बस वग़ैरा में चिल्ला कर बातें कर के और ज़ोर से कह़्क़हे लगा कर दूसरे मुसाफ़िरों को अपने आप से बदज़न मत कीजिये ❁ भीड़ के मौक़अ़ पर किसी ज़ईफ़ या मरीज़ को देखें तो ब निय्यते सवाब उस को बस वग़ैरा में **ब इसरार** अपनी निशस्त पेश कर दीजिये ❁ ह़त्तल इम्कान फ़िल्मों और गाने बाजों से पाक बस और वेगन वग़ैरा में सफ़र कीजिये ❁ सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोह़फ़ा लेते आइये कि **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ''जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ **हदिय्या** (या'नी तोह़फ़ा) लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए'' (ابن عساکر ج۵۲ص۲۳۰) ❁ शर-ई सफ़र से वापसी में मक्रूह वक़्त न हो तो सब से पहले अपनी मस्जिद में और जब घर पहुंचे तो घर पर भी दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़िये।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत

का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
व बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 1434 हि.
16-11-2012

येह रिसाला पढ़कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	नम्बर	उ़न्वान	नम्बर
दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़्फ़िरत हो गई	1	मुसल्मानों का सामाने जंग	11
दुरूद की जगह ص लिखना ह़राम है	2	कुफ़्फ़ार का सामाने जंग	12
दो कमसिन मुजाहिदीन	2	मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी	14
येह नौ उ़म्र कौन थे ?	4	ह़ैरत अंगेज़ जज़्बे का राज़	14
मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी	5	फ़िरिश्तों के ज़रीए़ मदद	15
लटकता बाज़ू	6	जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام का घोड़ा	16
अनोखा जज़्बा	7	दुआ़ मोमिन का हथियार है	17
अबू जह्ल का सर	8	जो रोता है उस का काम होता है	17
अबू जह्ल की आख़िरी बक्वास	9	मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी	20
क़ुदरत के निराले अन्दाज़	10	सफ़र के 32 म-दनी फूल	21

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآنِ مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	السیرۃ النبویۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر درمنثور	دار الفکر بیروت	سبل الھدیٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	محمد رسول اللہ	دار القلم دمشق
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مدارج النبوۃ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
مسلم	دار ابن حزم بیروت	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
کتاب المغازی	مؤسسۃ الاعلمی للمطبوعات بیروت	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी **क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
مكتبة المدينة
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net